महाराष्ट्र का सबसे उत्तम सहकारी बैंक चलाने का पूरा श्रेय खाताधारकों को है

400 करोड़ के जमापूंजी वाले सहकारी बैंक के चेयरमैन विनोद मिश्रा से मुलाकात

भारत की सबसे बड़ी महानगरपालिका की शिक्षा समिति का अध्यक्ष रहने के बाद सुधार समिति और प्रभाग समिति का अध्यक्ष बनकर आम लोगों की समस्याओं का निवारण करने वाले उर्जावान पार्षद विनोद उदयनारायण मिश्रा से अगर पूछा जाए कि उन्हें सबसे अधिक संतोष किस भूमिका में मिलता है? तो तपाक से उनका जवाब होगा- मालाड सहकारी बैंक में चेयरमैन की भूमिका निभाने में. कारण है कि यह वही को-ऑपरेटिव बैंक है जिसे उनके ईमानदारी का दूसरा नाम कहे जाने वाले उनके पिता ने अपने पसीने से खड़ा किया, सींचा और बड़ा किया तथा जब उसमें फल-फूल पल्लवित हुए तो एक साथी के धोखे के आघात को दिल पर सहते हुए दुनिया को अलविदा कह गए. एक ओर जहां पूरे राज्य और देश में को-ऑपरेटिव बैंक एनपीए (डूबा हुआ कर्ज) की वजह से गर्त में जा रहे हैं, वहां उनका बैंक केवल 8% के एनपीए को भी इस मार्च तक खत्म कर उसे शून्य तक पहुंचाने की दिशा में है. अभाव, दिशाभ्रम और धोखे के बावजूद अपने अकेले के भरोसे शीर्ष को छूनेवाले बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी विनोद उदयनारायण मिश्रा ने पिछले दिनों दै.'आज का आनंद' के प्रतिनिधि सतीश मिश्र से बेहद बेबाकी से सारी बातें कीं. पेश हैं उसी विशेष मुलाकात के मुख्य अंश:

करीब 30,000 अकाउंट धारक और 400 करोड़ रूपए की जमापूंजी वाले द मालाड सहकारी बैंक ने इस राशि का 55% यानी करीब 228 करोड़ रुपए कर्ज के रूप में वितरित करने के बावजूद मामूली एनपीए से यह बता दिया है कि चुस्त, प्रभावी और सक्रिय प्रबंधन से को-ऑपरेटिव बैंकों को सही तरीके से चलाया ही नहीं जा सकता बल्कि फायदे में रखते हुए उसके जरिए समाज के विकास के उद्देश्य को भी अर्जित किया जा सकता है. दो दशक से पहले तक बैंक की डिपॉजिट 98 करोड़ थी जो आज बढ़कर 400 करोड़ का आंकड़ा छू रही है. सहकारिता का सही पाठ यहां देखा जा सकता है.

एक नजर में : विनोद उदयनारायण मिश्र

- जन्मदिन : 25 मार्च, 1973
  स्थान : लालगंज, आजमगढ़ (यूपी)
- प्रेसिडेंट : द मालाड सहकारी बैंक (2014 से अब तक), इससे पूर्व 2006 से 2008 तक वाइस प्रेसिडेंट
- संचालक : द मालाड सहकारी बैंक (2001 से 2006 और 2009 से 2014)
- मुंबई महापालिका की सुधार समिति के सदस्य होने के बाद अब प्रभाग समिति के अध्यक्ष
- सचिव : भाजपा, मुंबई (2013 से अब तक)
- महासचिव : भाजपा युवा मोर्चा, महाराष्ट्र प्रदेश (2007 से 2013 तक)
- अध्यक्ष : बजरंग दल (1995-1997)
- द मालाड सहकारी बैंक को-कॉपरेटिव डिपार्टमेंट का 'फ्रंटियर अवार्ड' मिला.
- Phone : 98678 00002
- Email : vinodumishra@gmail.com
- वेबसाइट : www.vinodmishra.org

? अपने आरंभिक दिनों, जन्मस्थान और परिवार के बारे में बताईये ?

विनोद मिश्रा : मेरा जन्म यूपी के एक टिपिकल साधारण परिवार में हुआ, जहां जन्म से ही जीवन संघर्ष शुरू हो जाता है. सबसे बड़ी बहन और इसके बाद तीन भाइयों में मैं सबसे बीच का था. आरंभिक छठी तक की पढ़ाई गांव के ही सामान्य स्कूल में हुई और आगे की शिक्षा के लिए वहां से पांच कि.मी. दूर जाना होता था. गांव के सुविधाविहीन परिवेश में जीवन जीते हुए ना तो कभी किसी से कोई शिकायत की और न ही उसका कोई निवारण होता था. मिडिल की पढ़ाई के बाद प्रतिदिन 5 किमी चलकर जाना और उतना ही आना दिनचर्या का अंग बना हुआ था. पैरों में पूरे साल में एक बार चप्पल मिलती थी, वह अगर खराब हो जाए, फट जाए या गुम हो जाए तो उसके बिना ही चलाना नियति थी. ऐसे हालात में भी हम कभी स्कूल से नहीं चूके और बिल्कुल ध्यान लगन और मगन के साथ पढ़ाई की. बचपन का यह हिस्सा मुझे कभी नहीं भूलता जब मैं स्कूल से आते वक्त अपनी गाय और उसके बछड़े के लिए प्रतिदिन किसी के भी खेत से फ्रेश घास काट कर लाता और उसी प्यार से उन्हें खिलाता था.

? आपका मुंबई आगमन कब हुआ ?

विनोद मिश्रा : मेरे पिताजी 1946 में ही मुंबई आ गए और यहां पर हिंद साइकिल में नौकरी करने लगे. जब मैंने आठवीं की पढ़ाई पूरी की तो मेरी पढ़ाई में भी एक अजीबोगरीब यह विरोधाभास बना कि मेरी मां चाहती थीं कि मैं मुंबई जाकर पढ़ाई करुं क्योंकि यहां बेहतर सुविधाएं हैं और अच्छी पढ़ाई के अवसर है जबकि पिताजी चाहते थे कि मैं इलाहाबाद में दाखिला लेकर ग्रेजुएशन करूं और इसके बाद आईएएस की तैयारी करूं. जैसा कि हम पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार के लोग हमेशा लक्ष्य बनाए रखते हैं. अंतत: मां की चली और उनके आदेशानुसार मुंबई पहुंचा और यहां मैंने नवजीवन स्कूल में दाखिला लिया. उत्तर प्रदेश से आने के बावजूद मैंने दोनों नौवीं और दसवीं की परीक्षाएं अच्छे नंबर से पास की. पिताजी की विचारधारा तो शुरूआत से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की ही रही. उस दौर में जब कांग्रेस के अलावा और किसी पार्टी की बारे में कोई सोचते नहीं थे, ऐसे में मेरे पिता अकेले आरएसएस के समर्थक थे, इस वजह से पहले से ही राजनीतिक माहौल रहा करता था. पिताजी से लगभग हर कार्यकर्ता का आना-जाना मिलना लगा रहता था.

? द मालाड सहकारी बैंक की स्थापना कब और किसने की ?

विनोद मिश्रा : 1968 में स्थापना के वक्त मालाड सहकारी बैंक पहले क्रेडिट सोसायटी के रूप में थी और बाद में 1976 में इसे को-ऑपरेटिव बैंक का लाइसेंस मिला. पिताजी ने गरीबी और गरीब की आवश्यकताओं को बेहद करीब से देखा था. वे जानते थे कि मध्यम और निम्नवर्ग के लोगों को कैसे फौरी जरूरतों का सामना करना पड़ता है. इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर उन्होंने को-ऑपरेटिव सोसायटी बनाई थी. मैं अपने मुंह से कहूंगा तो अच्छा नहीं लगता लेकिन उनके संपर्क में आना वाला हर व्यक्ति दिल पर हाथ रखकर यही कहता था कि उसने लाल बहादुर शास्त्री के बाद इस कदर ईमानदार जीवन जीते हुए केवल मेरे पिताजी को देखा है. वे पूरी तरह निस्वार्थ भावना से इस काम में लगे रहे, लोगों की मदद करते रहे. यह आलम था कि उन्होंने सख्त हिदायत दे रही थी दे रखी थी कि हमारे परिवार का कोई भी व्यक्ति ना तो बैंक से कोई संबंध रखेगा और न ही उनका नाम लेकर आनेवाले किसी व्यक्ति को एंटरटेन किया जाए. इस वजह से हम सभी न कभी बैंक की किसी गतिविधि में शामिल हुए किसी को कर्ज की पैरवी की बात तो सपने में भी नहीं सोच सकते थे. उन्होंने कभी बैंक से एक पैसे का किसी तरह मद में अलाउंस नहीं लिया, न ही किसी प्रकार का वेतन. वे हमेशा बैंक के काम और इसके बाद का समय पार्टी को देने के लिए पूर्ण समर्पित रहे.

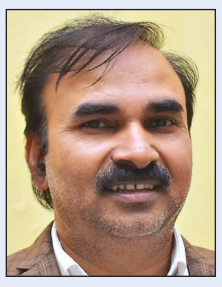

इतना जान लीजिए कि बैंकों से लिया कर्ज चुकाने से इंकार करने वाले केवल धनाढ्य उद्योगपति ही होते हैं. हमारे सहकारी बैंक से छोटा कर्ज लेने वाले मध्यम और निम्न वर्ग के आदमी की प्राथमिकता सबसे पहले कर्ज चुकाने की होती है. यह ऐसा वर्ग है जिसे कर्ज होने पर नींद नहीं आती. यही वजह है कि हमारी 400 करोड़ की बैंक का एनपीए केवल 8% है जिसके मार्च, 2020 तक पूरा खत्म हो जाने की पूरी उम्मीद है. हमारी बैंक का स्वास्थ्य सबसे बढ़िया इसलिए है क्योंकि हम दूसरों की तरह दो बैलेंस शीट नहीं बनाते, यहां तो सबकुछ पारदर्शी है.

? आपके जीवन पर पिता का सबसे अधिक प्रभाव दिखाई दे रहा है !

विनोद मिश्रा : सच कहूं तो मेरे जीवन के हर पन्ने पर उनके इतने सशक्त हस्ताक्षर हैं यानी इतना गहरी छाप है कि मैं उससे उबर नहीं सकता. हर कदम पर उन्हीं के आदर्शों में जीता हूं और इसका मुझे गर्व है. बड़े धनाढ्य लोग जीवन के आखिरी चरण में दानदाता बनें तो वह स्वाभाविक है लेकिन यहां तो एक निपट गरीब और ईमानदारी का पर्यायवाची बन चुके व्यक्ति ने दूसरों के लिए हर पल जीने का मार्ग अपना लिया था. यहां तक की जब पिताजी जब हिंद साइकिल से रिटायर हुए तो सर्विस फंड इत्यादि मिला था जिसके सहारे उनका और हम सब का भविष्य तय होना था वह भी उनकी दरियादिली का शिकार हो गया. उन्होंने समाज के एक रूतबाधारी संघ अनुयायी के एक सौदे में गारंटीदार बनने की जिम्मेदारी ले ली और जब वह पैसे न दे पाया तो पिता जी को अपनी जमापूंजी की 95% राशि खुद देकर चुकानी पड़ी. इस घटना का सदमा उन्हें बेहद अधिक लगा और इसके बाद उनका अस्थमा का रोग इतना उभर आया कि वे बीमार होकर बिस्तर पर आ गए. पिताजी की हद से अधिक ईमानदारी का आपको एक उदाहरण देता हूं. पिताजी की बीमारी का वह हाल था और हमारे पास टेलीफोन नहीं था. इसलिए मैंने यह जानने पर कि सांसद के कोटे से टेलीफोन जल्दी लग सकता है, पिताजी के सहयोगी सांसद राम नाईक से बात बताई तो उन्होंने तुरंत स्वीकृति दे दी और हमारे घर फोन भी लग गया. उस दिन पिताजी कहीं बाहर गए थे, आने बेहद खफा हो गए बोले- यह फोन जरूरतमंद और विशिष्ट परिस्थिति वाले लोगों के लिए है, यह तुमने गलत किया है और वह भी बिना मुझसे पूछे, इसे तुरंत लौटा दो. आप इससे अंदाजा लगा सकते हैं कि वे मूल्यों के प्रति कितने प्रतिबद्ध थे कि एक दिन के भीतर फोन हटाना ही पड़ा.

? फिर आपने आजीविका कमाने के लिए क्या मार्ग अपनाया ?

विनोद मिश्रा : 1992 में 12वीं कक्षा में फेल हो जाने के बाद कोई नौकरी तो मिलने से रही इसलिए तब से ही पैसे कमाने के लिए कुछ बिजनेस चालू करने की योजना बनाई. इस बीच पता चला कि वेस्टर्न रेलवे में फरसाण इत्यादि की सप्लाई का टेंडर भरा जा सकता है. मैंने कोशिश की और ईश्वर की कृपा से वह मुझे मिल गया. साथ ही कुरार विलेज की झोपड़पट्टियों में कम लागत से इमिटेशन ज्वेलरी की एक छोटी सी यूनिट शुरू की थी लेकिन पिताजी की बीमारी की वजह से ये दोनों बिजनेस बुरी तरह प्रभावित हुए. पिताजी की सांस की बीमारी और उसके दैनंदिन ऑक्सीजन यूनिट के खर्च का आर्थिक रूप से बहुत असर हुआ. मैंने जब बैंक से कर्ज लेने की सलाह दी तो वे बिफर पड़े, 'यह वृक्ष मैंने दूसरों के लिए लगाया है, खुद के लोगों को छांव दिलाने के लिए नहीं.'

? उनकी मृत्यु क्या उसी सदमे का परिणाम थी ?

विनोद मिश्रा : उन्हें मानसिक आघात तो लगा ही था क्योंकि अपनों ने ही उनके भरोसे को तोड़ा था. गारंटी की वजह से पूरी जमाराशि गंवाने के धोखे के बाद उन्हें जो एवज में जमीन दी गई थी, उस पर भी कब्जा नहीं मिल पाया था. मुझे याद है वह दिन जब वह शाम को अपने रोज की आदत के मुताबिक घर के बाहर बैठने गए तब किसी ने आकर बताया कि पंडित जी आपकी जमीन को घेर कर पत्रा लगाकर दिया गया है. वे इस सदमे को बर्दाश्त न कर सके और तुरंत ही उन्हें हार्ट अटैक आया और हॉस्पिटल ले जाने के पहले ही उनका देहांत हो गया. यह ईमानदारी की सबसे बड़ी परीक्षा थी. इंतहां थी भरोसे के टूटने की. इसके बाद तो मैंने चाणक्य सी कसम खाई कि जिस वजह से मेरे पिता की मौत हुई है उस कब्जे को लिए बिना चैन से नहीं बैठूंगा. इस मामले में तत्कालीन सांसद राम नाईक जी ने भी मेरी काफी मदद की और अंतत: अवैध कब्जे को हटाकर मुझे वह जगह मिल सकी. इसके तुरंत बाद मैंने वहां दुकान बनाकर उसे किराये पर दे दी जिससे कम से कम हमारी रोजी-रोटी में मदद हो जाए.

? आपका फिर सहकारी बैंक से किस तरह जुड़ाव शुरू हुआ ?

विनोद मिश्रा : जब तक पिताजी जिंदा थे, तब तक तो उन्होंने हम सब पर बैंक के पास फटकने तक की पाबंदी लगा रखी थी. उनके देहावसान के बाद मुझे परिवार के भरण-पोषण के लिए इधर-उधर हाथ-पैर मारते देखकर उनके कुछ साथियों ने मुझे मालाड सहकारी बैंक में 'मनी कलेक्टर' बनने के लिए प्रोत्साहित किया. प्रतिदिन खाताधारकों के घर-दुकान और ऑफिस जाकर कलेक्शन करने का यह काम करनेवालों को कुछ कमीशन मिलता था. इस तरह जिस बैंक को पिता ने मेरे स्थापित किया था, उसमें मैं एक मामूली कलेक्टर के रूप में जुड़ा. पिताजी के जाने के बाद कई ऐसे लोग बैंक पर प्रभुत्व जमाने में लग गए जिनका लक्ष्य सही नहीं था. तब बैंक से जुड़े लोगों ने मुझे प्रेरित किया कि मैं बैंक से बड़े स्तर पर जुड़ू और पिता के काम को आगे बढ़ाऊं. 2000 में मैं जब इसका पहला इलेक्शन हुआ तब मैं केवल 26 साल का था और लोगों के भरोसे और विश्वास की बदौलत मैं और मेरे पूरे पैनल ने एकपक्षीय जीत दर्ज की. इस तरह मैं पूरे महाराष्ट्र में सबसे कम उम्र का डायरेक्टर बना.

? लोगों ने इसमें भी क्या इसे वंशवाद नहीं खोजा ?

विनोद मिश्रा : विरोध करनेवाले तो हर ओर होते ही हैं. लेकिन यह भूमिका ऐसी थी जिसमें पद पर नियुक्त नहीं किया गया था बल्कि आम मध्यम व निम्न वर्गीय जनता ने अपने वोट से चुना था, वह भी 98% वोट से. यह केवल विश्वास के जरिए ही पाया जा सकता है. उन सबको मुझमें उस दानवीर उदयनारायण मिश्रा की छवि दिख रही थी जिसने बैंक की उन्नति और प्रगति के लिए अपनी जान तक दे दी. उन्हें भरोसा था कि उनका पुत्र हूं तो निश्चित रूप से मैं ईमानदार रहूंगा और मैंने आज तक उनके भरोसे में एक प्रतिशत भी कमी नहीं आने दी. उसी का परिणाम है कि उसे पहले इलेक्शन के बाद से बैंक ने मुझे अलग नहीं होने दिया. पिता के स्थापित मापदंडों पर चलते हुए मैं पहले संचालक बना. 2006 में फिर से में पूरा मेरा पैनल जीतकर आया और 2008 में चेयरमैन बना. पहले वाइस चेयरमैन था. फिर चेयरमैन बना. मेरे डिपाजिटर हमेशा ही मेरी प्राथमिकता रहे हैं. मैं पूरी तरह से उनके प्रति जवाबदेह हूं. 2011 में जब चुनाव हुआ तो उसमें हम और मेरा पूरा पैनल जीता. 2016 में मेरा निर्विरोध चयन हुआ और मैं 2014 से आज तक निश्चित निरंतर चेयरमैन हूं. यह सब मेरे खाताधारकों और सभी संचालकों के विश्वास का परिणाम है.

? सहकारी बैंकों के प्रति उठते भरोसे के दौर में आपके बैंक के इतने बेहतर हालात का कोई विशेष कारण ?

विनोद मिश्रा : हमारे बैंक के इस समय कुल मिलाकर करीब 30,000 अकाउंट धारक है जिसमें ज्यादातर मध्यम और निचले तबके के लोग इसके सदस्य हैं. इसकी वजह यह है कि इस बैंक का उद्देश्य कभी कमाई का नहीं नहीं रहा बल्कि आम लोगों को साथ में जोड़कर उनके और समाज के जीवन को विकसित करने का रहा है. इस समय बैंक ने अब तक करीब अपनी सारी जमा राशि का 55% यानी करीब 228 करोड़ रुपए का कर्ज लोगों को दे रखा है. 2001 में हमारे बैंक की डिपॉजिट 98 करोड़ थी जो आज बढ़कर 400 करोड़ से अधिक हो गई है. 2011 में हमारे बैंक का एनपीए (न वसूला जा सकनेवाला वितरित कर्ज) 35 करोड़ रुपए था, लेकिन आज वह घटकर 4% यानी करीब 8 करोड़ रह गया है और हमारे चहुमुखी कोशिशों और तरीकों की बदौलत मार्च, 2020 तक हम इसे शून्य तक ले जाने के लिए प्रतिबद्ध हैं. सभी कर्जधारकों से हमारी बातचीत अंतिम दौर में है और पूरी उम्मीद है हम सफल होंगे.

? आपका बैंक काफी सेवाभावी और परोपकारी कार्य में भी संलग्न है ?

विनोद मिश्रा : हमारे बैंक का उद्देश्य पहले से सेवा और सहकार रहा है. इसलिए हम अपने खाताधारकों के इलाकों में स्वच्छता अभियान, बड़े-बड़े मेडिकल कैंप लगवाना, गैस पाइप डलवाना इत्यादि काम हमेशा करते रहे हैं. कांदिवली पूर्व के दामू नगर में कुछ साल पहले लगी आग करीब दो-तीन किलोमीटर की सारी झोपड़पट्टी और घर जलकर स्वाहा हो गए थे. तब किसी के पास न तो खाने के लिए कुछ बचा था और न शरीर पर कपड़े थे लेकिन ऐसे में मलाड सहकारी बैंक ने प्रभावितों के लिए शिविर लगाकर लोगों को सुबह के नाश्ते-चाय से लेकर लंच फिर शाम के नाश्ते-चाय और रात के खाने का सारा इंतजाम किया. यह कार्य लगातार एक पखवाड़े तक चलता रहा और हम सबने तन-धन-मन से सबकी मदद की. इसी वजह से हमारे बैंक को-कॉपरेटिव डिपार्टमेंट का 'फ्रंटियर अवार्ड' मिला है. लगातार हम आई कैंप भी लगाते रहते हैं. अभी हाल ही में हमारी बैंक और शेयरधारकों की ओर से मुख्यमंत्री राहत कोष में 87 लाख रुपए की राशि दी गई.

? बीजेपी में भी आपको निरंतर जवाबदेही के पद मिले ?

विनोद मिश्रा : मैंने मुंबई आने के बाद पिताजी की पूरी कार्यशैली को समझा. आरएसएस की पृष्ठभूमि के चलते अधिकारियों से काम निकालने के तरीकों और राजनीतिज्ञों से निपटने को सीखा. जब इसमें पारंगत हुआ तो बीजेपी के कई नेता मेरे काम के तरीके से प्रभावित दिखे और पिताजी से अनुमति लेकर मुझे युवा मोर्चा में शामिल करवाया. यहां पहले मुझे मुंबई बीजेपी के बस्ती समिति का काम दिया गया और मैं वार्ड नंबर 48 (कुरार विलेज) में काम करने लगा. बाद में विधानसभा क्षेत्र का महामंत्री और सन् 2000 में बजरंग दल का नगर प्रमुख बना. 2003 में बीजेपी युवा मोर्चा का जनरल सेक्रेटरी और 2012 से प्रदेश का महामंत्री बना. इसके बाद से ही पार्टी का मुंबई सचिव हूं. पिछले मुंबई महानगर पालिका चुनाव में नगरसेवक चुनाव लड़ने का पार्टी ने आदेश दिया तो वहां शानदार विजय हासिल की. इसके अलावा बैंकिंग बोर्ड की क्वासी-ज्यूडिशियल कमेटी में जज हूं. मालाड (पूर्व) में कुरार विलेज एक ऐसी जगह है गैस की पाइप लाइन नहीं थी और इसके प्रयास बड़े-बड़े नेता और सांसद विधायक कर चुके थे लेकिन नहीं हो पाया था लेकिन मैंने इसके लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न बना कर काम करना शुरू किया और आज वहां घर-घर गैस पहुंच गई है.

? आपके परिवार की जानकारी देंगे ?

विनोद मिश्रा : मेरी पत्नी ललिमा मिश्रा एक साधारण गृहिणी हैं, जिनकी हां, सामाजिक कामों में विशेष रूचि है. मेरे दो बेटे गौरव और वंश हैं जो अभी स्कूल में पढ़ रहे हैं. बस, छोटा सा परिवार है और बेहद सीमित जरूरतें हैं. इसके अलावा पत्नी की ओर से सामाजिक कार्यों के लिए मिलने वाला प्रोत्साहन ही मुझे अधिक मेहनत से काम करने को प्रेरित करता है.

Popular among lacs of readers across Maharashtra
3 Daily Newspapers in 3 Languages

हिंदी दैनिक | मराठी दैनिक | English Daily

Newspapers filled with Education & Entertainment content

For last 49 years, Aaj Ka Anand group has been involved in giving quality reading material to the readers through its dailies... The thirst for knowledge, education and information of readers is identified by the group and the same is shared in the dailies... These are the dailies which have something to read for everyone in the family...